विकास और वृद्धि

:- विकास और वृद्धि की प्रक्रिया

Type of Development
- शारीरिक
- सामाजिक
- नैतिक
- संवेगात्मक
- भावनात्मक
- मानसिक - बौद्धिक

:- मानसिक विकास Mental Development (संज्ञानात्मक विकास) (Cognitive)

मनोवैज्ञानिक
- प्याजे
- ब्रूनर
- कैली
- आसुबेल
- सुलीवान

'पियाजे'

Imp — प्याजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास

(बालों stage बच्चों के है।) प्याजे ने 22 साल की उम्र में zoology से P.hd की थी।

संज्ञानात्मक कार्य
- (व्यवस्था) Orgnigation
  - Schemes (पहले से बच्चे में होता है) (In-built) — Imp
  - Active and Informational processing being
- समायोजन (Adaptation) — (समंजन) (~~समायोजन~~)
  - आत्मसात्मीकरण
  - समाविष्टीकरण

* O

| Coaxue

|

S--

. . . .

I. ----- : 2 T)) 3:3 J

*** cers bera

संज्ञानात्मक विकास के 4 स्तर हैं। पूर्व प्रत्यात्मक (concept)

1- संवेदीगतिशील (0-2 yr)
2- पूर्व संक्रियात्मक स्तर या प्रज्ञात्मक (operation) (बुद्धि) (2-4yr) / अन्त प्रज्ञा (4-7yr)
3- मूर्त संक्रियात्मक स्तर (7-11 yr)
4- औपचारिक संक्रियात्मक स्तर (11-14 yr)

=> संवेदीगतिशील स्तर Sencery Motor Stage -(0-2)

- Refiloxition
- Sencery motor
- Shemy verbal अद्रभाषी
- प्रयास त्रुटी
- वस्तु और व्यक्ति के लिए प्रत्यय (Concept) बनना।
- इसमे इसे स्वःरति (Self love) की भावना
- समय का प्रत्यय
- वह अपने और अपने शरीर व दूसरी चीजो के बीच में तालमेल बैठा लेता है।

=> पूर्व संक्रियात्मक या प्रज्ञात्मक स्तर (2-4yr)
Pre-Operative stage

- संकेतात्मक कार्यो का प्रदुरभाव
- भाषा प्रयोग प्रारम्भ

2 Types

पूर्वप्रत्यात्मक स्तर (2-4yr) और अन्तप्रक्रिया (4-7yr) (Pre-Conceptual stage)

- खोज करना अनुवेषण
- क्यो और कैसे का चिन्तन
- अनुकरण करेगा
- कल्पना करना
- भाषा का अधिकतम विकास
- 800 शब्दो का भण्डार

mr sr eser sr -

पियाजे की थ्योरी

Language & Thought of mind

अन्तर्प्रज्ञ या Intution — बिना किसी तार्किक विचार प्रक्रिया के किसी वस्तु या बात को मस्तिष्क के द्वारा तुरन्त स्वीकार कर लेना।

- बौद्धिक विकास सम्पूर्ण हो जाता है।
- संरक्षण का सिद्धान्त सीख जाता है।

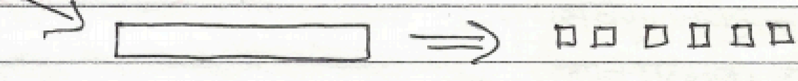

- दो प्रत्यय को बच्चे को एक साथ नही समझा सकते।
- सामाजिक कार्यो में रूचि लेने लगता है।
- आत्मीकरण एवं समायोजन मे संतुलन बना लेता है।
- (मेरा) इसके अन्दर तार्किक (सबका) गुणवत्ता आ जाती है।

=> मूर्त संक्रिया अवस्था (Concrete stage) (7-11 yrs)

- विलोमीय पद की श्रृंखला द्वारा विचार करने लगता है।
- मूर्त वस्तुओ में अनेक तार्किक संक्रियाये करने लगता है।
- इसके अंदर तीन गुणात्मक मानसिक योग्यतायें।

विचार की विलोमपीता समझ जाता है।

(i) संरक्षण
(ii) क्रमबद्धता का उपयोग
(iii) पुरस्कार और दण्ड में अंतर समझने लगता है।

- आत्म केन्द्रित प्रवृत्ति घट जाती है।
- दूसरो के विचार सुनने लगता है।
- बच्चा सामाजिक होने लगता है।

=> औपचारिक संक्रियात्मक स्तर Formal Operation stage (11-14 yrs)

- अमूर्त बातो के संबंध में तार्किक चिन्तन करने लगता है।
- समस्या समाधान व्यवहार (चिन्तन) करने लगता है।

IN, SO

---

férrég tà: s:

3

- ये निष्कर्ष परिकल्पना पूर्ण व्यवहार है।
- स्व! आलोचना पूर्ण व्यवहार

"प्याजे की परिभाषा"

NET-P- "बच्चे वातावरण के साथ संबंध बनाते हुए अपनी समझ बुद्धि का विकास कर लेते है।"

इसके अनुसार Teacher is less important

P - प्याजे को इन्द्री अनुभव वादी कहते है।

पियाजे - "निर्जीव में जीव को देखना"

↓

Anamilism

'ब्रूनर' के अनुसार संज्ञानात्मक विकास

- "विकास की किसी भी अवस्था में कुछ भी सिखाया जा सकता है।"

बच्चे अपने हिसाब से समस्या का सक्रिय समाधान ढूंढ लेते हैं। और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

बच्चों के अंदर अधिगम के लिए तत्परता होती है।

इन्होंने बच्चों के ऊपर सामाजिक प्रभाव पर विशेष जोर डाला

ये प्याजे, वोगोस्टकी (Vygotsky), डारविन से प्रभावित थे।

इन्होंने ज्ञान की संरचना पर जोर दिया।

Spairal पाठ्यक्रम पर जोर दिया

Spairal Brunar

- वर्गीकरण (catagrigation) coding कूटबद्ध, construction of cognitive Map (संज्ञानात्मक मैप)

ज्ञान का ढाँचा बनाना Scaffold by Vygotsky

⇒ संज्ञानात्मक विकास का स्तर

- क्रियात्मक अवस्था — Enactive stage
- प्रतिबिम्बात्मक अवस्था — Iconice stage
- संकेतात्मक अवस्था — Symbalic stage

① क्रियात्मक अवस्था -

- बालक हाथ पैर चलाता है।
- वस्तुओं को काटता, रगड़ता, पटकता है,

इस अवस्था में मनोचालक ज्ञान महत्वपूर्ण है।

A r- r

T srt

::testra fàrrrr a; _* U **

---- E

.

Cy.. 0

TUTS cz, zen s

r.

② प्रतिबिम्बात्मक अवस्था)

- मूर्त वस्तुओ की व्याख्या करता है।
- मानसिक प्रतिमाओ का निर्माण करता है।
- चमक, शोर और गति से प्रभावित होता है।
- पहले मानसिक प्रतिमा बनेगी फिर इसका प्रत्यय का निर्माण होगा।

Ex- A for Apple

③ संकेतात्मक या प्रतितात्मक स्तर

- घटनाओ को चिन्हो के माध्यम से समझा जाता है।
- क्रियात्मक और प्रत्ययीकृत समझ का विकास होता है।
- भाषा तर्क गणित का विकास होता है।
- जटिल अनुभवों से सीखने लगता है।
- संज्ञानात्मक कार्यक्षमता बढ़ जाती है।
- विचारों को संक्षिप्त करना सीख जाता है।
- इन्होने संज्ञानात्मक विकास को मानव के आन्तरिक प्रतिनिधित्व का अनिवार्य अंग माना।

बालक क्रिया द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है। वस्तुओ प्रतिको पदार्थो के प्रत्यात्मक गुण Concept को बाद मे सीखता है।
बड़े होने पर प्रतीको से ही नवीन ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

Ex — छोटे पर हम A, B, C, D सीखते है पर बड़े होने पर हमे उन अक्षरो का ज्ञान होता है कि हमने इसे क्यो सीखा है

नवीन ज्ञान + सूचना का ग्रहण

↓

अर्जित ज्ञान का रूपान्तरण

| | c-c-, -)

C) S | |

Ex- fe e la

L - ----

sèsse * -a

St. . . . ---

EI TETE

NU

I

विशेषताये इनकी Theory

- प्रतीक ही भविष्य में जीवन निर्माण में व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।
- गामक (Motor) संबंधित विकास उद्दीपक (Stimulus) अनुक्रिया (Reaction) अनुबंध (conditioning) (आदत) पर आधारित होते हैं।
- गामक (क्रिया) प्रतीत व शब्द अनु पर संज्ञानात्मक विकास आधारित है।

By — Bruner

इनकी Book — 'The culture of Education'
'Process of Education'

⇒ मूल्य क्रिय विधि → H.S. सुलीवान

⇒ अशुबेल — "Meaning full learning Theory"

ETT

z ses

57 calca of Eluatiaal

|

--

**** - "---, li ....